Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 6, Issue 3&4 - 2021, Pg. No. 4-7
Peer Reviewed Journal

Research Article

# रामधारी सिंह दिनकर की युग चेतना

## स्नेहलता गुप्ता

हिन्दी विभागाध्यक्षा, गिन्नी देवी मोदी गर्ल्स पी जी कॉलिज, मोदीनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202103

## I N F O

**E-mail Id:**
snehala80@gmail.com
**Orcid Id:**
https://orcid.org/0000-0001-8940-1318

*Date of Submission: 2021-11-28*
*Date of Acceptance: 2021-12-15*

## सारांश

दिनकर वाद–विशेष की संकीर्ण सीमाओं से मुक्त अतिशय प्रबुद्ध और युगचेता कवि हैं। मानव–जीवन की चिरन्तन समस्याओं पर उनका चिन्तन बहुत मौलिक है। उनकी कविताओं में जनजागरण की विचारधारा और राष्ट्रीयता बड़े प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त हुई है। दिनकर ओज और आवेग के कवि हैं। उन्होंने गॉधीवादी दर्शन के विपरीत क्रान्तिकारी विचारधारा को काव्यात्मक वाणी दी हैं। कवि ने ध्वंसक क्रान्ति का आह्वान नवनिर्माण हेतु ही किया है। 'हुकांर' में क्रान्ति–दूत दिनकर की ही हुंकार गूॅजी है। स्वतन्त्रता के उपरान्त भी दिनकर की राष्ट्रीयता और युग–चेतना क्षीण नहीं पड़ी। उन्होंने जनतन्त्र के निवासियों को निरन्तर उनके अधिकारों और कर्त्तव्यों के प्रति सचेत किया। 'रश्मिरथी में उन्होंने कर्ण के माध्यम से जाति–प्रथा के स्थान पर उज्ज्वल चरित्र को श्रेष्ठ माना है। दिनकर कला को कला के लिए मानकर जीवन के लिए मानते हैं। इसलिए कला–क्षेत्र की दृष्टि से उन्होंने काव्य–शास्त्रीय परम्पराओं को छोड़कर युग के अनुरूप हदयग्राही काव्य की रचना की है।

**मुख्य बिन्दु:** युग चेतना, वाद–विशेष, काव्यात्मक वाणी, कला–क्षेत्र

## शोध–पत्र

हिन्दी काव्य–जगत में जब छायावादी कविता का जोर–शोर समाप्त हो चुका था, तब दिनकर अपनी प्रवाहमयी और ओजस्वी काव्य वाणी को लेकर प्रकट हुए। दिनकर ने छायावाद और प्रगतिवाद की तत्कालीन काव्य–धाराओं के बीच से युगानुकूल मार्ग निकाला। वाद–विशेष की संकीर्ण सीमाओं से मुक्त रहकर उन्होंने अपने साहित्य में उन सभी तत्वों को निस्संकोच भाव से ग्रहण किया, जो मानव–हित के अनुकूल पड़ते हैं। अपने इसी स्वस्थ, सन्तुलित एवं व्यापक दृष्टिकोण के कारण हम दिनकर को सबसे अधिक प्रबुद्ध एवं युगचेता कवि मान सकते हैं। आधुनिक युग की ओजस्विता ने उन्हें प्रगतिशील चिन्तन प्रदान किया। आधुनिक हिन्दी साहित्य में वे एक ऐसे कवि हैं, जिन्होंने अपने युग और मानव जीवन की चिरन्तन समस्याओं पर मौलिक रूप से विचार किया है।

## राष्ट्रीयता

दिनकर एक समसामयिक राष्ट्रीय कवि हैं। समय ने उनसे लेखनी ग्रहण करवाकर युगचित्र प्रस्तुत करवा लिया है। ''सन् 20 से 40 के बीच अपनी समसामयिकता के प्रति जितने सजग और ईमानदार दिनकर रहे हैं, उतना सजग कोई दूसरा कवि दिखाई नहीं देता। इन दो दशकों के इतिहास के लिए दिनकर की रचनाएँ सर्वाधिक प्रामाणिक हैं।''[1] वास्तव में उनकी कविताओं में जनजागरण की विचारधारा बड़ी तीव्र और प्रखर शब्दों में व्यक्त हुई है। राष्ट्रीयता की प्रेरणा के सम्बन्ध में कवि ने स्वयं चक्रवाल की भूमिका में लिखा है ''राष्ट्रीयता मेरे व्यक्तित्व के भीतर से नहीं जन्मी। उसने बाहर से आकर मुझे आक्रान्त किया। उस समय सारा देश उत्साह से उच्छल और दासता की पीड़ा से बेचैन था। अपनी समय की धड़कन सुनने को जब भी मैं देश के हृदय से कान लगाता, मेरे कान में किसी बम के धड़ाके की आवाज आती, फॉसी पर झूलने वाले किसी नौजवान की निर्भीक पुकार आती।''[2] कवि ने राष्ट्रीय भाव को जागृत करने के लिए अतीत के गौरवपूर्ण पन्नों से चन्द्रगुप्त, चाणक्य, लक्ष्मीबाई जैसे महान वीरों की तेज असि का स्मरण कराते हुए देश को ''सुप्तों'' को झकझोरा है।'' युग कवि दिनकर ने परतन्त्रता के कलंक को धाने के लिए ही देश प्रेम से लबालब कविताओं के माध्यम से देशवासियों को नवजागरण का सन्देश दिया। युगीन परिस्थितियों की आंच में ढला दिनकर–काव्य परतन्त्रता से मुक्ति के लिए किये गये संघर्ष का ज्वलन्त उदाहरण है। शान्तिप्रिय स्वतन्त्र भारत पर चीनी आक्रमण


*Copyright (c) 2021: Author(s). Advanced Research Publications*

से देश की संवेदनशील आत्मा को गहरा धक्का लगा। दिनकर ने ''परशुराम की प्रतीक्षा'' में सिंह–गर्जना की –

''छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाये
मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाये।''[3]

## क्रान्ति–दर्शन

दिनकर ओज और वर्चस्व के कवि हैं। एक आवेग उनके चिन्तन को भी आदि से अन्त तक नियन्त्रित रखता है। क्षमा और शान्ति का आवरण ओढ़कर अपनी कायरता को छिपाना दिनकर को मान्य नहीं है। उनमें सर्वत्र पौरूष की हुंकार द्रष्टव्य है–

''स्वर को कराल हुंकार बना देता हूँ
यौवन को भीषण ज्वार बना देता हूँ
शूरों के दृग अंगार बना देता हूँ
हिम्मत को ही तलवार बना देता हूँ।''[4]

द्विवेदी युग के बाद हिन्दी काव्य मुख्य रूप से गांधीवादी दर्शन से प्रभावित हो गया था। दिनकर ने गॉधीवादी दर्शन के विपरीत कांग्रेस की वामपंथी विचारधारा तथा क्रान्तिकारी युवकों के स्वरों को काव्यात्मक वाणी दी है। सुभाष और जयप्रकाश नारायण के कतिपय विचारों के साथ ही उनका मेल बैठता है। कवि ने गांधी–नीति को तत्कालीन परिस्थितियों की सापेक्षता में परखा और यह निष्कर्ष निकाला कि आज का युग क्रान्ति का युग है। शान्ति–शान्ति की पुकार करने से क्रान्ति संभव नहीं। ये गॉधी की पूजा भी अंगारों से करने के पक्ष में हैं। वस्तुतः दिनकर की क्रान्ति अहिंसा से पृथ्क हिंसात्मक क्रान्ति है–''गिराओ बम, गोली दागो/ गॉधी की रक्षा करने को गॉधी से भागो।''[5] वस्तुतः दिनकर की क्रान्ति को गॉधी युग की विद्रोही राष्ट्रीयता की संज्ञा दी जाती है जो इन पंक्तियों के संदर्भ में उचित ही है–

''गीता मेंजो त्रिपिटक निकाय पढ़ते हैं
तलवार गलाकर जो तकली गढ़ते हैं,
शीतल करते हैं अनल प्रबुद्ध प्रजा का
शेरों को सिखलाते हैं धर्म अजा का।''[6]

दिनकर क्रान्ति के कवि हैं। उनकी प्रबल आकांक्षा है कि सम्पूर्ण दिशाओं में क्रान्ति की लपटें फैल जायें और विप्लव का तूर्यनाद गूँज उठे। आज की परिस्थितियों को देखते हुए कवि युधिष्ठिर का नहीं बल्कि भीम और अर्जुन जैसे वीरों का आह्वान करना चाहता है।''[7] कवि हिमालय से भी मौन त्यागकर सिंहनाद करने का आग्रह करता है। क्रान्ति और विद्रोह के स्वर दिनकर के काव्य में सर्वत्र द्रष्टव्य हैं। सन् 42 में क्रान्ति जब दबने लगी, तब उन्होंने ''आग की भीख'' नामक ज्वलन्त कविता लिखी। हिमालय, नई दिल्ली, ताण्डव, दिगम्बरी, हाहाकर, त्रिपथगा और अनल किरीट जैसी कविताओं में दिनकर की क्रान्ति–चेतना साकार हो उठी है। क्रान्ति का आह्वान करती दिनकर की ये काव्य–पंक्तियॉ द्रष्टव्य हैं–

''उठ भूषण की भाव तरंगिणी, लेनिन के दिल की चिंगारी
युग–मर्दित यौवन की ज्वाला, जाग जाग री क्रान्ति–कुमारी।''[8]

क्रान्तिकारी साहित्यकार जब समकालीन वातावरण से सन्तुष्ट नहीं होता, तब उसका आमूल विनाश करना चाहता है। एतदर्थ कवि ने शंकर से प्रलय नृत्य करने का आग्रह किया है–''सारे भारत में गूँज उठे, हर–हर बम का महोच्चार।''[9] तूफान का विस्फोट कभी यह नहीं सोचता कि उसका प्रभाव कितना भयंकर होगा। दिनकर के काव्य मे ंतो परिस्थितियों का यथार्थ विस्फोट ही व्यंजित हुआ है, जिसे कवि ने निर्भीक अभिव्यक्ति देकर युग का सच्चा प्रतिनिधित्व किया है। कवि ने चॉदी का उज्ज्वल शंख उठाकर भैरव हुंकार फूँकी है। विप्लव हेतु कवि ने ''नटवर'' का आह्वान करते हुए लिखा है–

''घहरे प्रलय–प्रयोद गगन में
अन्ध घूम हो व्याप्त भुवन में
बरसे आग, बहे मलयानिल
मचे त्राहि जग के आंगन में
फटे अतल आकाश, धंसे लग, उछल–उछल कूदे भूधर
नॉचो, हे नाचो नटवर।''[10]

कवि ने ध्वंसक क्रान्ति का आहवान नव निर्माण हेतु ही किया है। कवि की क्रान्ति सौददेष्य है। वस्तुतः दिनकर की राष्ट्रीयता आरम्भ से ही क्रान्तिगर्भित रही है। दिनकर का क्रान्तिकारी स्वर मात्र एक नारा नहीं, वरन् क्रियाशीलता और कर्मठता का स्वर भी उसी में से सुनायी पड़ता है। कवि का विश्वास है कि भारत में दलित गलित समाज का पुनरूत्थान सुधारवाद की मन्द गति से नहीं, बल्कि क्रान्ति की ऑधी से होगा। क्रान्ति दिनकर का अभीष्ट है, यहॉ वह साध्य और साधन दोनों ही है। दिनकर का क्रान्तिकारी रूप ''हुंकार'' में विशेष रूपेण द्रष्टव्य है। यहां कवि पूर्णरूपेण क्रान्तिकारी हो गया है। रामवृक्ष बेनीपुरी का कथन है, ''हमारे क्रान्ति–युग का सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व कविता में इस समय, दिनकर कर रहा है।''[11]

दिनकर की अधिकांश कविताएं राष्ट्र–जागरण और क्रान्तिकामना से सम्बन्धित हैं। इसमें कवि ने अंग्रेजी शासन के विरूद्ध आग ही आग उगली है। सम्पूर्ण संग्रह में क्रान्ति के दूत दिनकर की हुंकार ही गूँजी है। स्वतन्त्रता को भी कवि ने उसके ''सुख–शान्तिरूप'' के कारण नहीं अपितु उसके ''नितक्रान्तिरूप'' के कारण पूजा है।''[12] क्रान्ति के विराट स्वरूप का चित्रांकन करते हुए कवि ने क्रान्ति को विपथगा के रूप में चित्रांकित किया है। कवि की निश्चित धारणा है कि क्रान्ति जब भी आती है। बड़े जोश के साथ चतुर्दिश छा जाती है। उसके चरण जिस तरफ पड़ते हैं, उस ओर का भूगोल दब जाता है। किन्तु नये इतिहास की सृष्टि होती है–

''मैं निस्तेजों का तेज, युगों के मूक मौन की बानी हूँ
दिल जले शासितों के दिल की मैं जलती हुई कहानी हूँ
सदियों की जब्ती तोड़ जगी, मैं उस ज्वाला की रानी हूँ
मैं जहर–उगलती फिरती हूँ, मैं विष से भरी जवानी हूँ
भूखी बाधिन की घात क्रूर, आहत भुजंगिनी का दंषन।''[13]

''वास्तव में हुंकार का यहीं क्रान्तिद्रष्टा दिनकर कुरूक्षेत्र के भीष्म के रूप में अवतरित हुआ है। ... कविता में ब्रिटिश दमन नीति से उत्पन्न क्षोभ और घुटन के वातावरण का चित्रण प्रधान है, जिसका समाधान है क्रान्ति। दिनकर ने यहां भी युवकों को ही क्रान्ति का कर्णधार माना है।''[14] 1962 के आक्रमण ने दिनकर के क्रान्तिकारी रूप पर नया पानी चढ़ाया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरांत भी दिनकर की क्रान्ति–विषयक लिखाई कम नहीं हुई, क्योंकि कवि की दृष्टि

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202103

में 'अभी समर शेष है' स्वतन्त्रता को अलादीन का चिराग मानकर निष्क्रिय भाव से परिवर्तन की प्रतीक्षा करने और दूसरों के आगे हाथ फैलाकर अपने अभाव पूरे कर लेने के पराश्रित भाव की कवि ने ''नीम के पत्ते'' में भरसक भर्त्सना की। दिनकर की ओजस्वी हुंकार ने जनतन्त्र के निवासियों को उनके अधिकारों के प्रति सचेत किया।

''आजादी केवल नहीं, आप अपनी सरकार बनाना ही
आजादी है उसके विरूद्ध खुलकर शोर मचाना भी।''[15]

अब दिनकर के काव्य में युगचेतना के क्षेत्रों का स्पष्टीकरण अपेक्षित है।

## राजनीतिक क्षेत्र में

दिनकर का स्वतन्त्रापूर्व लिखित काव्य क्रान्ति के अंगारों से सजा है। उनके विचार में स्वतन्त्रता–भवन क्रान्ति की ही आधार–शिला पर खड़ा होता है। अतः दिनकर ने स्वतन्त्रता–प्राप्ति के लक्ष्य की सफलता के लिए समस्त देशवासियों में क्रान्ति का आवेश अपनी रचनाओं के द्वारा भरा। दिनकर ने अंग्रेजी शासनकाल में अन्याय से प्रताड़ित और पराजित मनोवृत्ति वाले भारतीय जनमानस को जो क्रान्ति–चेतना प्रदान की थी तथा उनमें अन्याय के प्रतिकार और प्रतिशोध का भावोत्तेजन किया, वह सामयिक संदर्भ में ही नहीं, अपितु ऐतिहासिक अनुक्रम में भी अभिनन्दनीय है। कवि ने साम्राज्यवादी शोषकों को ललकारते हुए कहा–

''सावधान! जन्मभूमि किसी का चारागाह नहीं है,
घास यहां की पहुँच पेट में कॉटा बन जाती है।''[16]

## सामाजिक क्षेत्र में

दिनकर क्रान्ति के द्वारा सामाजिक वैषम्य का नाशकर आदर्श समाज की सृष्टि करना चाहते हैं। क्रान्ति से वे समाज में फैली अराजकता को मिटाना चाहते हैं। आदर्श समाज की स्थापना के लिए रूढ़ परम्पराओं का भंजन तथा जाति–भेद, छुआ–छूत आदि सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन आवश्यक है। दिनकर ने ''रश्मिरथी'' के कर्ण के माध्यम से जाति–प्रथा के स्थान पर नर के उज्ज्वल चरित्र को श्रेष्ठ माना है। दिनकर की क्रान्ति का आधार जन–शक्ति है। उनके मतानुसार अन्यायी व अत्याचारी शासक के विरोध में जनता को क्रान्ति करना अति आवश्यक है–

''हुंकारों से महलों की नींव उखड़ जाती
सॉसों के बल से ताज हवा में उड़ता है,
जनता की रोके राह, समय मे ताब कहॉ
वह जिधर चाहती, काल उधर ही मुड़ता है।''[17]

## सांस्कृतिक धार्मिक क्षेत्र में

दिनकर पुरूषार्थ और पराक्रम के कवि हैं। इसलिए उन्होंने भाग्यवाद को पाप को छिपाने का आवरण और मानव के शोषण का साधन माना। उन्होंने मन्दिर–मस्जिद में पूजा आदि करने को निरर्थक बताया। ईश्वर पूजा के स्थान पर उन्होंने मानव–पूजा को वांछनीय माना है – ''देवता मिलेंगें खेतों में, खलिहानों में।''[18] उन्होंने निवृत्ति की अपेक्षा प्रवृत्ति मार्ग को अधिक महत्व दिया है। उनके अनुसार गृहस्थ–धर्म छोड़कर सन्यास की ओर जाना कायरता ही है। उनके अनुसार ''उर्वशी'' के कमरे में महर्षि रमण का चित्र होना चाहिए और रमणाश्रम में उर्वशी को साधना करनी चाहिए। काम और अध्यात्म के बीच सन्तुलन लाने से आदमी आधुनिक सन्त बनता है।''[19] दिनकर की धार्मिक क्रान्ति को अवतार–पूजा के विरोध के रूप में भी देखा जा सकता है –

''मगर राम या कृष्ण लौटकर
फिर न तुझे मिलने वाले हैं
टूट चुकी है कड़ी
एक तू ही उसको पहने बैठा है
पूजा के ये फूल फेंक दें
अब देवता नही होते हैं।''[20]

## साहित्यिक क्षेत्र में

दिनकर कला को कला के लिए न मानकर जीवन के लिए मानते हैं। उनके विचार प्रधान काव्य ''कुरूक्षेत्र', रश्मिरथी, उर्वशी आदि इसी के ज्वलन्त उदाहरण हैं। हिन्दी कविता को छायावादी काल्पनिकता से मुक्ति दिलाकर उसे जीवन की यथार्थता से जोड़कर प्रतिष्ठित करने वाले कवियों की श्रेणी में दिनकर का महत्वपूर्ण स्थान है। जीवन की विभीषिकाओं से मुख मोड़कर कल्पना के पंख लगाकर उड़ना कवि ने अपने कविधर्म के विपरीत समझा और काव्य को सामाजिक परिवर्तन बन गई है।'' कला–क्षेत्र की दृष्टि से कवि ने पुरानी परिपाटी के निर्वाह मे नायक–नायिका, रस, अलंकार आदि की उलझनों में न पड़कर युग के अनुरूप उद्देश्यपूर्ण काव्य की सृष्टि की है।

## निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि दिनकर सामाजिक चेतना के चारण हैं। विद्रोह और क्रान्ति उनकी कविताओं का जाना–पहचाना स्वर है। दिनकर की क्रान्तिकारी मनोदशाा के पीछे एक विशाल पृष्ठभूमि रही है। रूसो, मार्क्स और गॉधी के प्रभाव से क्रान्ति ने मानो उनकी चेतना पर कब्जा कर लिया था। निसन्देह दिनकर की पृथक् विचारधारा समाज में क्रान्ति जगाने की रही। ''राजनीतिक क्षेत्र में अन्याय के प्रति क्रान्ति, साम्राज्य के प्रति क्रान्ति, क्रूर शासकों के प्रति क्रान्ति.... युद्ध और शान्ति के सम्बन्ध में कवि की क्रान्तिकारी विचारधारा, आर्थिक क्रान्ति... सामाजिक क्षेत्र में क्रान्ति–भावना, अन्ध सामाजिक कुरीतियों का खण्डन, वर्ण एवं जाति व्यवस्था का विरोध आदि सभी पहलुओं पर सभी विषयों में उनकी क्रान्तिकारी दृष्टि प्रस्फुटित हुई है। और अपने देश भारत में शीघ्र क्रान्ति की बलवती आशा भी प्रकट की है। यहॉ दिनकर का साहित्यिक दृष्टिकोण सिर्फ क्रान्ति जगाने का नहीं, वरन् देश की दुर्दशा को सुधारने का भी महत्वपूर्ण प्रयास माना जायेगा।''[21]

## सन्दर्भ सूची

1. डॉ0 बच्चन सिंह–आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास–पृ0 270।
2. चक्रवाल की भूमिका – पृ0 34।
3. परशुराम की प्रतीक्षा – पृ0 21।
4. हुंकार – पृ0 16।
5. परशुराम की प्रतीक्षा – पृ0 47।

**ISSN: 2456-0510**
**DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202103**

6. वही पृ0 10।
7. रेणुका पृ0 7।
8. वही पृ0 33।
9. रेणुका–पृ0 55।
10. वही पृ0 2।
11. राष्ट्रकवि दिनकर, ''हुंकार'' भूमिका–पृ0 26।
12. हुंकार–पृ0 39।
13. वही पृ. 74।
14. डॉ0 पुष्पा ठक्करः दिनकर काव्य में युग चेतना–पृ0 188।
15. नीम के पत्ते–पृ0 5।
16. नीम के पत्ते–पृ0 5।
17. नीम के पत्ते–पृ0 5।
18. चक्रवात – पृ0 352।
19. शिवसागर मिश्रः दिनकरः एक सहज पुरूष, पृ0 104।
20. नीम के पत्ते – पृ0 27।
21. डॉ0 पुष्पा ठक्करः दिनकर काव्य में युग–चेतना, पृ0 82।

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202103